कथा सरिता

अच्छी सीख

पिता और पुत्र साथ-साथ टहलने निकले, वे दूर खेतों की तरफ निकल आये, तभी पुत्र ने देखा कि रास्ते में, पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे पड़े हैं, जो... संभवत: पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे। पुत्र को मज़ाक सूझा, उसने पिता से कहा, क्यों न आज की शाम को थोड़ी शरारत से यादगार बनायें, आखिर... मस्ती ही तो आनन्द का सही स्रोत है। पिता ने असमंजस से बेटे की ओर देखा।

पुत्र बोला - हम ये जूते कहीं छुपाकर झाड़ियों के पीछे छुप जाएं। जब वो मज़दूर इन्हें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मज़ा आएगा। उसकी तलब देखने लायक होगी और इसका आनन्द मैं जीवन भर याद रखूंगा। पिता, पुत्र की बात को सुन गम्भीर हुये और बोले - बेटा! किसी गरीब और कमज़ोर के साथ उसकी ज़रूरत की वस्तु के साथ इस तरह का भद्दा म. जाक कभी न करना। जिन ची. जों की तुम्हारी नज़रों में कोई कीमत नहीं, वो उस गरीब के लिये बेशकीमती है। तुम्हें ये शाम यादगार ही बनानी है तो आओ... आज हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छुप कर देखें कि इसका मज़दूर पर क्या प्रभाव पड़ता है। पिता ने ऐसा ही किया और दोनों पास की ऊँची झाड़ियों में छुप गए।

मज़दूर जल्द ही अपना काम ख़त्म कर जूतों की जगह पर आ गया। उसने जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी कठोर चीज़ का आभास हुआ, उसने जल्दी से जूते हाथ में लिए और देखा कि अन्दर कुछ सिक्के पड़े थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वो सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से उन्हें देखने लगा। फिर वह इधर-उधर देखने लगा कि उसका मददगार शख्स कौन है? दूर-दूर तक कोई नज़र नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब में डाल लिए। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के पड़े थे। मज़दूर भाव विभोर हो गया। वो घुटनों के बल ज़मीन पर बैठ आसमान की तरफ देख फूट-फूट कर रोने लगा। वह हाथ जोड़ बोला - हे भगवान्! आज आप ही किसी रूप में यहाँ आये थे। समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए आपका और आपके माध्यम से जिसने भी ये मदद दी, उसका लाख-लाख धन्यवाद। आपकी सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी। तुम बहुत दयालु हो प्रभु! आपका कोटि-कोटि धन्यवाद।

मज़दूर की बातें सुन... बेटे की आँखें भर आयीं। पिता ने पुत्र को सीने से लगाते हुये कहा - तुम्हारी मज़ाक वाली बात से जो आनन्द तुम्हें जीवन भर याद रहता, उसकी तुलना में इस गरीब के आँसू और दिए हुये आशीर्वाद तुम्हें जीवन पर्यंत जो आनन्द देंगे वो उससे कम है क्या? पिताजी - आज आपसे मुझे जो सीखने को मिला है, उसके आनंद को मैं अपने अंदर तक अनुभव कर रहा हूँ। अंदर में एक अजीब सा सुकून है। आज के प्राप्त सुख और आनन्द को मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया जिन्हें मैं पहले कभी नहीं समझ पाया था। आज तक मैं मज़ा और मस्ती-मज़ाक को ही वास्तविक आनन्द समझता था, पर आज मैं समझ गया हूँ कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आनंददायी है।

सही दिशा

एक पहलवान जैसा हट्टा कट्टा, लंबा-चौड़ा व्यक्ति सामान लेकर किसी स्टेशन पर उतरा। उसने एक टैक्सी वाले से कहा कि मुझे साईं बाबा के मंदिर जाना है। टैक्सी वाले ने कहा - दो सौ रुपये लगेंगे। उस पहलवान आदमी ने बुद्धिमानी दिखाते हुए कहा - इतने पास के दो सौ रुपये, आप टैक्सी वाले तो लूट रहे हो। मैं अपना सामान खुद ही उठाकर चला जाऊंगा।

वह व्यक्ति काफी दूर तक सामान लेकर चलता रहा। कुछ देर बाद पुन: उसे वही टैक्सी वाला दिखा, अब उस आदमी ने फिर टैक्सी वाले से पूछा - भैया अब तो मैंने आधा से ज़्यादा दूरी तय कर ली है, तो अब आप कितने रुपये लेंगे? टैक्सी वाले ने जवाब दिया चार सौ रुपये। उस आदमी ने फिर कहा - पहले दो सौ रुपये, अब चार सौ रुपये, ऐसा क्यों?

टैक्सी वाले ने जवाब दिया - महोदय, इतनी देर से आप साईं मंदिर की विपरीत दिशा में दौड़ लगा रहे हैं जबकि साईं मंदिर तो दूसरी तरफ है। उस पहलवान व्यक्ति ने कुछ भी नहीं कहा और चुपचाप टैक्सी में बैठ गया।

इसी तरह ज़िंदगी के कई मुकाम में हम किसी चीज़ को बिना गंभीरता से सोचे सीधे काम शुरू कर देते हैं और फिर अपनी मेहनत और समय को बर्बाद कर उस काम को आधा ही करके छोड़ देते हैं। किसी भी काम को हाथ में लेने से पहले पूरी तरह सोच विचार लें कि जो आप कर रहे हैं, वो आपके लक्ष्य का हिस्सा है कि नहीं।

हमेशा एक बात याद रखें कि दिशा सही होने पर ही मेहनत पूरा रंग लाती है और यदि दिशा ही गलत हो तो आपकी कितनी भी मेहनत का कोई लाभ नहीं मिल पायेगा। इसीलिए दिशा तय करें और आगे बढ़ें। कामयाबी आपके कदम ज़रूर चूमेगी।

असली समझदार

एक गाँव में एक सेठ रहता था। एक बार राजा ने उसे चर्चा पर बुलाया। कुछ देर चर्चा के बाद राजा ने कहा - ''आप बहुत बड़े सेठ हैं, इतना बड़ा कारोबार है पर आपका लड़का इतना मूर्ख क्यों है? उसे भी कुछ सिखायें। उसे तो सोने चांदी में मूल्यवान क्या है, यह भी नहीं पता।'' यह कहकर राजा ज़ोर से हँस पड़ा। सेठ को बुरा लगा, वह घर गया व लड़के से पूछा ''सोना व चांदी में अधिक मूल्यवान क्या है?'' बिना एक पल भी गंवाए लड़के ने कहा। ''तुम्हारा उत्तर तो ठीक है, फिर राजा ने ऐसा क्यों कहा? सभी के बीच मेरी खिल्ली भी उड़ाई।'' लड़का बोला -''गाँव के पास ही मेरे स्कूल जाने के मार्ग पर राजा एक खुला दरबार लगाते हैं। मुझे देखते ही बुलवा लेते हैं। अपने एक हाथ में सोने का व दूसरे में चांदी का सिक्का रखकर, जो अधिक मूल्यवान है वह ले लेने को कहते हैं... और मैं चांदी का सिक्का ले लेता हूँ। सभी ठहाका लगाकर हंसते हैं व मज़ा लेते हैं। ऐसा तक़रीबन हर दूसरे दिन होता है।''

''फिर तुम सोने का सिक्का क्यों नहीं उठाते, चार लोगों के बीच अपनी फ़ज़ीहत कराते हो व साथ में मेरी भी!'' लड़का हँसा व हाथ पकड़कर पिता को अंदर ले गया। उसने एक पेटी निकालकर दिखाई जो चांदी के सिक्कों से भरी हुई थी। वह देख सेठ हतप्रभ रह गया। लड़का बोला, ''जिस दिन मैंने सोने का सिक्का उठा लिया, उस दिन से यह खेल बंद हो जाएगा। वो मुझे मूर्ख समझकर मज़ा लेते हैं तो लेने दें, यदि मैं बुद्धिमानी दिखाऊंगा तो कुछ नहीं मिलेगा। आपका बेटा हूँ... अक़्ल से काम लेता हूँ।'' मूर्ख होना अलग बात है और मूर्ख समझा जाना अलग...। स्वर्णिम मौके का फायदा उठाने से बेहतर है... हर मौके को स्वर्ण में तब्दील करना।

आगरा-सिकन्दरा। सेंट्रल जेल के जेलर शिव कान्त जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. गीता।

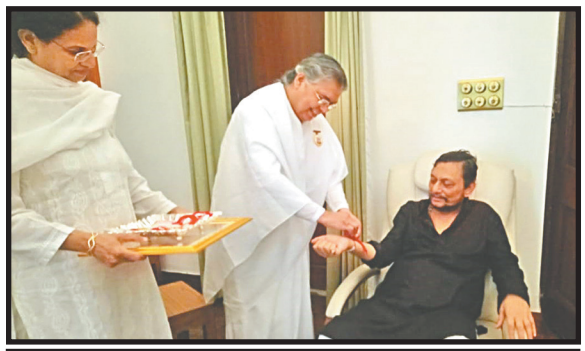

दिल्ली-करोल बाग(पाण्डव भवन)। सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के जस्टिस एस.ए.बोबड़े को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पुष्पा।

दुमका-झारखण्ड। राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुरमू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. जयमाला।

गया-ए.पी. कॉलोनी। डिस्ट्रिक्ट जज रविन्द्र पटवारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।

बालगंगा-मोतिहारी(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तुरकौलिया में आयोजित अलौकिक रक्षाबंधन महोत्सव के दौरान सम्बोधित करते हुए विधायक राजेन्द्र राम। मंचासीन हैं ब्र.कु. निशा, ब्र.कु. अशोक वर्मा, ब्र.कु. रवि तथा अन्य।

गया-बिहार। शिवली थारो,मैनेजर,महाबोधी सोसायटी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शीला।

दिल्ली-हरिनगर। मयंक अग्रवाल,डी.जी.,डी.डी. न्यूज़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शालू। साथ हैं ब्र.कु. सुशांत।